मॉड्यूल 7: सामाजिक व्यवहार परिवर्तन–बाल संरक्षण

सत्र 3: किशोर न्याय (बच्चों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम, 2015 के तहत बच्चों और परिवारों को परामर्श देना

अवधि: 9:24 मिनट

आईए परामर्श के आवष्यक तत्वों के बारे में विस्तार से दृष्टि डालें।

भरोसा: यदि बच्चे का परामर्शदाता पर भरोसा नहीं है तो वह बच्चे की मदद नहीं कर पाएगा, इसलिए परामर्श देने से पहले बच्चे का भरोसा जीतें। बच्चा अपनी भावनाएं और चिंताएं तभी साझा करेगा जब उसे परामर्शदाता पर विश्वास होगा।

गोपनीयता: बच्चे की गोपनीयता का आदर करें। उसे इस बात का विश्वास दिलाएं कि उसके द्वारा दी गई जानकारी को बिल्कुल गोपनीय रखा जाएगा। परामर्श की पूरी प्रक्रिया में गोपनीयता बहुत महत्वपूर्ण होती है और बच्चे की मर्यादा को बढ़ाती है।

आत्म–निर्धारण: जितना व्यावहारिक रूप से संभव हो बच्चा अपने जीवन से जुड़े फैसले खुद कर सकता है। परामर्शदाता का काम है उसे विकल्प और अवसर प्रदान करना, या बच्चे के सामर्थ्य तथा परिस्थिति के अनुसार सबसे उचित विकल्पों (सामना करने की रणनीतियां) को खोजने में सहायता करना।

सकारात्मक दृष्टिकोण: बच्चा जो अच्छी तरह से कर पाता है उस पर जोर दें, और उसकी गलत बातों पर असहमति जताने के बजाए उसकी सही बातों का समर्थन करें। यदि बच्चा कोई काम अच्छी तरह से करता है या करने का प्रयास करता है तो उसे प्रोत्साहित एवं पुरस्कृत करें।

भावनाओं पर ध्यान दें: अक्सर बच्चे की भावनाओं पर चर्चा करना जरूरी होता है (छुपी हुई और प्रत्यक्ष दोनों) जिससे उसे खुद को और परिस्थिति को समझने में तथा उनका बेहतर सामना करने में मदद मिलेगी।

समानुभूति जताएं: समानुभूति का अर्थ है किसी अन्य व्यक्ति की नजर से दुनिया को देखना। यह बेहद जरूरी है कि बच्चे के नजरिए से उसे और उसकी समस्या को समझना। इससे बच्चे को भावनात्मक सहारा मिलता है।

साधारण परामर्शदाता विश्वसनीय दिखना चाहिए: एक परामर्शदाता को न केवल विश्वसनीय नजर आना चाहिए, बल्कि परामर्श के दौरान बच्चे के साथ संवाद में पूरी तरह से शामिल भी होना चाहिए, जिससे बच्चे को उस पर विश्वास हो तथा बच्चा संवाद का पूरा लाभ उठा सके। इसके साथ ही साधारण परामर्शदाता बतौर सही जानकारी, परिस्थिति और बच्चे की स्थिति की समझ के साथ अपनी भूमिका अच्छी तरह से निभा सके, एवं "बच्चे के सर्वोत्तम हित" में उचित फैसले पर पहुंच सके। इसके साथ ही साधारण परामर्शदाता को अपने दृष्टिकोण और कार्य में भावनात्मक रूप से संतुलित और तार्किक बना रहना चाहिए।

स्वस्थ परामर्श संबंध बनाए रखने की युक्तियां

अस्वस्थ परामर्श संबंध बनाना बहुत ही आसान है यह संचारकर्ता की ज़िम्मेदारी है कि वह बच्चे के साथ संवाद के दौरान परामर्श दिए जाने की पेशेवर सीमाएं बनाए रखें।

- कभी–कभी ऐसा हो सकता है कि बच्चा परामर्शदाता के बहुत नज़दीक आ जाए, जो कि उचित नहीं है। बच्चा परामर्शदाता को अपने पिता, माता, दोस्त या प्रेमी–प्रेयसी की नजर से देखने लगे। यह बेहद जरूरी है कि बच्चा यह समझे कि साधारण–परामर्शदाता उसकी चिंता करता/करती है, लेकिन बच्चे को यह भी एहसास होना चाहिए कि साधारण–परामर्शदाता उसकी सभी आकांक्षाओं और अधूरी जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता/सकती, तथा यह संवाद किशोर न्याय प्रणाली के दायरे में उसकी जरूरतों को सबसे बेहतर ढंग से पूरा करने के उद्देश्य से किया जा रहा है, वह बच्चा समाज में एक सकारात्मक योगदान करने वाला सदस्य बन सके।
- एक साधारण–परामर्शदाता में बच्चे के लिए भावनाएं जाग सकती हैं और वह बच्चे के कल्याण के बारे में जरूरत से ज्यादा चिंतित हो सकता है लेकिन उसे बार–बार यह याद रखना चाहिए कि उसकी भूमिका कहां समाप्त होती है।
- हो सकता है कि बच्चा परामर्शदाता के साथ असहजता या डर महसूस करे, और संवाद के दौरान सहयोग न करे। ऐसी स्थिति में परामर्शदाता किशोर न्याय प्रणाली से संबंधित किसी अन्य साझेदार की मदद ले सकते हैं, या फिर बेहतर संचार रणनीति के द्वारा सावधानी से बच्चे को अपने बारे में अपनी धारणा बदलने के लिए समय दे सकते हैं। इस बात का ध्यान रहे कि दो बच्चे संवेदना, अनुभव या पृष्ठभूमि के मामले में कभी एक जैसे नहीं होते हैं, और हरेक बच्चे के मनो–सामाजिक धरातल पर जाकर ही उसकी समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

सत्र 3.3: परामर्श की तकनीक एवं कौशल

आईए देखें कि एक परामर्शदाता में कौन से तकनीक एवं कौशल होने चाहिए।

प्रभावी परामर्श के कौन से कौशल हैं

चूंकि परामर्श की प्रक्रिया भी संचार का एक हिस्सा है इसलिए प्रभावी संचार के सभी कौशल, प्रभावी परामर्श के भी आवश्यक कौशल हैं। आपने पिछले सत्र में इन्हें जाना है। आईए इन्हें एक बार फिर दोहराएं।

- सक्रियता से सुनना।
- ध्यान देना: नेत्र संपर्क, सिर हिलाना, इत्यादि।
- मूल्यांकन करने से पहले पूरी बात सुनना।
- संदेश को पूरी तरह से सुनना।
- कारणों और भावनाओं की खोज करना।

- प्रतिबिंबित करना – बच्चे की भावनाओं की पहचान करना और उसे यह जताना कि आप उसकी भावनाओं को समझ रहे हैं।
- प्रश्न पूछना: खुले प्रश्न पूछना जिससे विस्तार से उत्तर देने में सहूलियत हो।
- बच्चे को समस्या की गहराई तक जाने में मदद करना जिससे समस्या को अच्छी तरह से समझा जा सके।
- अपनी भाषा में दोहराना: बच्चे द्वारा बताई गई बातों को अपने शब्दों में दोहराना।
- विवेचना करना: बच्चे को मूल मुद्दे के बारे में बताना जिससे वह जूझ रहा है।

परामर्श के कौशल तथा तकनीक

पिछले सत्र में आपने देखा कि परामर्शदाता को किन बातों में निपुण होना चाहिए। हम कुछ और कौशलों तथा तकनीकियों पर बात करेंगे जो उनमें होनी चाहिए।

संबंध स्थापित करना

- संबंध स्थापित करने का अर्थ है आपसी सम्मान, ज़िम्मेदारी और प्रभाव का संबंध स्थापित करना।
- यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।
- यह बच्चे के नज़रिए से उसकी दुनिया को समझने की एक ईमानदार कोशिश है।
- यह खुलकर बात करने की इच्छा है।
- बच्चे के साथ संवाद स्थापित करने के लिए बच्चे की आस्था और उसके मूल्यों का आदर जरूरी है। हालांकि यह जरूरी नहीं कि आप उसके साथ सहमत हो।
- यह घटनाओं को बच्चे के नजरिए से देखने की तत्परता है।

उपस्थिति

1. **शारीरिक उपस्थिति**
   - उपयुक्त मुद्रा, नेत्र संपर्क, और आपकी सामान्य शारीरिक अवस्था जिससे बच्चे को यह संदेश मिलता है कि परामर्शदाता उसकी ओर ध्यान दे रहे हैं।
   - सुनिश्चित करें कि आपके और बच्चे के बीच कोई वस्तु न हो।
   - अपने और बच्चे के बीच उचित दूरी रखें।
   - बच्चे के ठीक सामने बैठें।
   - आंखों का संपर्क बनाए रखें।
   - इस तरह से पेश आएं कि आप उसकी बात सुनने के लिए आतुर हैं।
   - बच्चे की ओर थोड़ा झुकें।

2. **मनोवैज्ञानिक उपस्थिति**

- बच्चे के शाब्दिक एवं अशाब्दिक संदेशों और इशारों को समझने की क्षमता

पड़ताल करने का कौशल

समानुभूति जताते हुए प्रतिक्रिया देना: बच्चे को इस तरह से सुनना और समझना चाहिए जैसे कि वह बच्चा आप खुद हो और उसी के अनुसार संचार करना चाहिए।

खुद के बारे में बताना

बच्चे के साथ अपनी जानकारी साझा करना

- यह जानकारी बच्चे के हित में हो, न कि परामर्शदाता के हित में।
- जानकारी ऐसी हो जिससे बच्चे को भी अपने बारे में बताने में उदाहरण के रूप में सहायक हो।
- जानकारी देने से बच्चे का ध्यान भटकना नहीं चाहिए।
- अगर संयम के साथ तथा उपयुक्त तरीके से किया जाए तो आपके चिकित्सीय(Therapeutic) संबंध में बढ़ोत्तरी हो सकती है।

सुझाव देना

एक निर्देश के रूप में

- सुझाव को आदेश या मांग के रूप में न देखा जाए
- जो सुझाव परामर्शदाता ने दिया है उसके परिणाम की ज़िम्मेदारी परामर्शदाता को लेनी चाहिए
- सुझाव इस तरह से दिया जाए जिसमें विकल्प चुनने का अंतिम निर्णय बच्चे या उसके परिवार का हो

एक प्रभावी परामर्शदाता के गुण

सही कौशल होने के अलावा परामर्शदाताओं में प्रभावी परामर्शदाता के गुण भी होने चाहिए।

- लोगों के लिए सकारात्मक सम्मान या आदर
- खुले विचार, गैर–निर्णायक रवैया और उच्च स्तर की स्वीकृति
- आत्म–जागरुकता और आत्म–अनुशासित
- विषय के संबंध में ज्ञान और समुदाय में उपलब्ध संसाधनों की जानकारी

विचारणीय बिन्दुः प्रभावी परिणाम के लिए परामर्शदाताओं को निम्नलिखित मुख्य बिन्दुओं को हमेशा याद रखना चाहिए।

- जितना आप बोलें उससे अधिक सुनें
- खुले प्रश्न पूछें
- शांत और संयम होकर कार्य करें
- सलाह न दें और लोगों पर समस्या का समाधान न थोपें